भाजपा और ज़ी मीडिया की मुसलमानों को बांटने की साजिश नाकाम

पैसे देकर ऑस्ट्रेलिया से बुलाए गए इमाम तौहीदी का प्रोग्राम दिल्ली में बुरी तरह फ्लॉप

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली: भाजपा और राज्यसभा सांसद सुभाष चंद्रा के चैनल ज़ी मीडिया और आरएसएस द्वारा देश के मुसलमानों को शिया-सुन्नी के बीच बांटने की एक बड़ी साजिश कुछ लोगों की सूझबूझ से नाकाम हो गई। यह साजिश कितनी बड़ी थी, इसका अंदाजा आप आसानी से नहीं लगा सकते। इस साजिश की कोशिश बताती है कि 2019 के चुनाव में क्या कुछ दांव पर लगने जा रहा है।

ऑस्ट्रेलिया में एक नया फर्जी इमाम सोशल मीडिया पर उभरा है। नाम है इमाम तौहीदी। यह शख्स खुद को इमाम ऑफ पीस (शांति का इमाम) बताता है और फेसबुक व ट्विटर समेत तमाम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर इस्राइल का समर्थन करना, ईरान को गाली देना, शिया-सुन्नी को लड़ाने की बात करना, ईरान की सेना को आतंकवादी संगठन बताना इसका काम है। यह एक कृत्रिम यानी बनावटी इमाम है जिसे इस्राइल ने अपने हित साधने के लिए खड़ा किया है। पूरी दुनिया के मुसलमान जब फलस्तीन पर इस्राइल के कब्जे और जुल्म के खिलाफ आवाज उठाते हैं, वहां यह दुनिया का इकलौता मुसलमान है जो इस्राइल की फलस्तीन नीति का समर्थन करता है। यह शख्स इस्लामोफोबिया (इस्लाम का डर) फैलाने के लिए भी जाना जाता है।

भारत में इन दिनों भाजपा, ज़ी मीडिया और कुछ पत्रकारों के नेतृत्व में एक थिंक टैंक काम कर रहा है जिसका मकसद है भारत में शिया-सुन्नी को ज्यादा से ज्यादा बांटने और उन्हें गुमराह करना। बहुत लंबे अर्से से शिया और सुन्नियों में ऐसे युवा मौलाना सामने आए हैं, जिनका मकसद शिया-सुन्नी के बीच एकता कायम करना। इसी मकसद से यह थिंक टैंक पाकिस्तानी भगोड़े तारिक फतेह को लेकर भारत आया और उसे ज़ी मीडिया ने मुसलमानों के तमाम मुद्दों पर भाजपाई एजेंडे के तहत अपने तमाम कार्यक्रमों में इस्तेमाल किया। तारिक फतेह जब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में मुसलमानों के स्वयंभू प्रवक्ता के तौर पर स्थापित हो गया तो बाकी चैनल भी उसे बुलाने लगे। लेकिन जल्द ही तारिक फतेह की असलियत खुल गई कि यह टीवी मीडिया द्वारा मुसलमानों के खिलाफ बयान दिलाकर बनावटी मुद्दों को हवा में उछालने के अलावा कुछ भी नहीं है।

सूत्रों का कहना है कि तारिक फतेह और भाजपा सांसद सुब्रह्मण्यम स्वामी ने ज़ी मीडिया को इमाम तौहीदी के इस्तेमाल की सलाह दी। ज़ी ने फौरन इमाम तौहीदी को ऑस्ट्रेलिया से भारत आने का न्यौता दे दिया। ज़ी ने फौरन ही अर्थ नाम से एक प्रोग्राम बनाया और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसी) में इसके चेयरमैन राम बहादुर राय की मदद से आयोजन की जगह भी हासिल कर ली। इमाम तौहीदी का कार्यक्रम 7 और 8 फरवरी को था। 7 फरवरी को सिर्फ इंटरव्यू के लिए तय हुआ और 8 फरवरी का दिन ज़ी के प्रोग्राम में चर्चा के लिए रखा गया।

8 फरवरी के आयोजन में यह संवाददाता खुद मौजूद था। प्रोग्राम में मुश्किल से लगभग 200 लोग जुटे। प्रोग्राम बेहद नीरस रहा, लोग बोर होते रहे। इमाम तौहीदी से सवाल-जवाब भी रखा गया लेकिन लोग उसमें भी सवाल पूछने के लिए उत्सुक नजर नहीं आए। अपने भाषण में इमाम तौहीदी ईरान को गाली देता रहा, सुन्नियों को आतंकवादी बताता रहा। मोदी की तारीफों के इतने पुल बांधे कि दर्शकों में बैठे लोग इसे फर्जी इमाम वाकई मान बैठे। यहां तक वह कश्मीर नीति पर भी बोला और उस पर मोदी के स्टैंड की तारीफ कर डाली।

सूझबूझ से नाकाम हुई कोशिश

इमाम तौहीदी के आने का जबरदस्त प्रचार ज़ी मीडिया द्वारा किया गया। कुछ अंग्रेजी अखबारों में प्रायोजित इंटरव्यू भी छपवाए गए। भाजपा, ज़ी मीडिया और कुछ पत्रकारों को यह लगा था कि इसके आने का शिया-सुन्नी दोनों ही विरोध करेंगे और कार्यक्रम जबरदस्त हिट हो जाएगा। इधर, वाट्सऐप पर शिया और सुन्नियों के तमाम संगठनों ने जबरदस्त प्रचार अभियान चलाया कि इमाम तौहीदी को अगर बहुत महत्व दिया गया तो प्रोग्राम हिट हो जाएगा और अंत में आरएसएस, भाजपा और ज़ी की मकसद पूरा हो जाएगा। वाट्सऐप पर चलाए गए इस अभियान का असर ये हुआ कि न तो सुन्नी और न शिया संगठन में से एक ने भी अपना प्रतीकात्मक विरोध तक नहीं जताया। हालांकि 8 फरवरी वाले प्रोग्राम को लेकर खुद ज़ी मीडिया वालों को आशंका थी कि जुमे वाले दिन नजदीक के जोरबाग कर्बला से शिया मुसलमान जरूर इसके विरोध में आएंगे, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

इसने भारत में शिया मुसलमानों के प्रमुख धर्म गुरु मौलाना कल्बे जव्वाद के बारे में अपशब्द कहे और अपनी फेसबुक पर भी लिखा लेकिन शिया मुसलमानों ने उस पर किसी तरह की प्रतिक्रिया न देकर इसके इरादों को चकनाचूर कर दिया, वरना मौलाना कल्बे जव्वाद को कोई कुछ भी बोलकर नहीं निकल सकता। एकाध प्रदर्शन तो मामूली बात है।

दिल्ली पुलिस के कुछ अफसरों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि हमें सख्त निर्देश थे कि इस शख्स की सुरक्षा में कोई चूक न होने पाए क्योंकि यह बहुत ही महत्वपूर्ण शख्स है। लेकिन इस शख्स का महत्व बढ़ाने के लिए ज़ी मीडिया ने बीबीएस नामक की सिक्योरिटी एजेंसी को इस पूरे कार्यक्रम और इमाम तौहीदी की सुरक्षा में तैनात कर दिया था। इनकी सुरक्षा लेयर के बाद दिल्ली पुलिस की सुरक्षा थी। 7 फरवरी को तमाम मीडिया संस्थानों ने ज़ी मीडिया से इमाम तौहीदी की लोकेशन जानने और इंटरव्यू की कोशिश की गई लेकिन ज़ी की ओर से बताया गया कि विशेष सुरक्षा कारणों से हम इमाम तौहीदी किस होटल में ठहरे हैं, उसकी जानकारी नहीं दे सकते। हालांकि इमाम तौहीदी को होटल ताज मानसिंह में ठहराया गया था, लेकिन वहां उससे मिलने आने वालों में सिर्फ भाजपा सांसद सुब्रह्मण्यम स्वामी, तारिक फतेह और आरएसएस के चंद नेता थे। दिल्ली की मीडिया को जानबूझकर दूर रखा गया ताकि वे इमाम तौहीदी से कोई तीखा सवाल न कर सकें।

गड़बड़ अतीत वाला

आरएसएस, भाजपा और ज़ी मीडिया अब इस इमाम तौहीदी का इस्तेमाल लोकसभा चुनावों तक जमकर करने वाले हैं। लेकिन इस इमाम के अतीत को भी खंगालना जरूरी है। यह इमाम खुद को ईरानी मूल का बाशिंदा लिखता है। इसका कहना है कि इसने ईरान की अल मुस्तफा यूनिवर्सिटी से इमाम की पढ़ाई की है और तब उसे वहां पगड़ी मिली और वह इमाम बना। जबकि अल मुस्ताफा यूनिवर्सिटी ने इसका सख्ती से खंडन किया। यूनिवर्सिटी का कहना है कि यह हमारे यहां एक साल तक पढ़ा है लेकिन इसकी संदिग्ध गतिविधियों की वजह से हमने इसे यूनिवर्सिटी से निकाल दिया। हमारी यूनिवर्सिटी में कम से कम 15 साल की इमाम की पढ़ाई के बाद ही कोई परीक्षा पास करके इमाम बनता है और उसे पगड़ी पहनाई जाती है।

अभी तक किसी भी टीवी चैनल ने ऐसे प्रोग्राम भारत में नहीं किए कि वे एक अनजान से इमाम को ऑस्ट्रेलिया से बुलाने, ठहराने और फीस देने पर लाखों रुपये खर्च करें। संघ और भाजपा की मदद से राज्यसभा के सदस्य बने सुभाष चंद्रा या तो अपने एहसान का बदला चुका रहे हैं या फिर प्रधानमंत्री मोदी के साथ सेल्फी लेने वाले सुधीर तिहाड़ी ने बड़े स्तर पर कोई डील करके इस प्रोग्राम को आयोजित कराया है। इसने अपनी फेसबुक पोस्ट पर भारत यात्रा के बाद लिखा - Thank you India. Thank you Zee Media, and Thank you PM Modi. यानी शुक्रिया भारत, शुक्रिया ज़ी मीडिया और शुक्रिया प्रधानमंत्री मोदी। लाइन अपने आप में बताने के लिए काफी है कि इमाम किन मंसूबों के तहत यहां आया था।

हरियाणा में भाजपा का प्यादा अब नए समीकरण के साथ सामने आया

बसपा ने इनैलो से गठबंधन तोड़ राजकुमार सैनी की पार्टी से किया समझौता

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

चंडीगढ़: हरियाणा में नए समीकरण के नाम पर बीजेपी ने अपने प्यादे के जरिए शनिवार को एक और चाल चल दी है। बहुजन समाज पार्टी ने ओमप्रकाश-अभय चौटाला की पार्टी इनैलो से गठबंधन तोड़कर बीजेपी के बागी सांसद राजकुमार सैनी की पार्टी लोकतंत्र सुरक्षा पार्टी (एलएसपी) से गठबंधन की घोषणा की है। दोनों दलों ने अपनी भावी चुनावी रूपरेखा का भी ऐलान कर दिया है। बसपा लोकसभा की 8 और विधानसभा की 35 सीटों पर चुनाव लड़ेगी, जबकि लोकसभा की 2 और विधानसभा की 55 सीटों पर खुद सैनी की पार्टी एलएसपी लड़ेगी। इस नए गठबंधन का पहला संयुक्त सम्मेलन 17 फरवरी को पानीपत में बुलाया गया है।

भाजपा का चुनावी खेल

हरियाणा में भाजपा काफी दिनों से जाटों की लीडरशिप खत्म करने और दलित-ओबीसी वोटों को कांग्रेस या इनैलो में जाने से रोकने की दिशा में काम कर रही है। इसी मिशन के तहत राजकुमार सैनी को बागी बनाकर हरियाणा में खड़ा किया गया। यह बहुत सोची-समझी रणनीति के तहत किया गया। सैनी ने जितनी तीखी बयानबाजी हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के खिलाफ की है, दूसरा दल होता तो अब तक सैनी को पार्टी से निकाल बाहर करता लेकिन भाजपा ने सैनी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। सैनी के भाषणों पर अगर बारीक नजर डालें तो यह कभी भी आरएसएस या मोदी-अमित शाह के खिलाफ बोलता हुआ नजर नहीं आता है। इसके निशाने पर हरियाणा भाजपा के नेता या फिर किसी भी दल के जाट नेता होते हैं। भाजपा ने अपने इस प्यादे को इतने सलीके से खड़ा किया है कि आम जनता इस राजनीति को समझ नहीं पाती है।

बसपा से तालमेल का मतलब

हरियाणा में करीब 20 फीसदी दलित और 20 फीसदी ही ओबीसी मतदाता हैं। करीब 40 फीसदी जाट मतदाता हैं। भाजपा इस 40 फीसदी जाट वोटरों की काट दलित और ओबीसी वोटरों में देख रही है। इसी वोट को एक तरफ ठिकाने लगाने के लिए राजकुमार सैनी नामक प्यादे को बागी बनाकर खड़ा किया गया है। योजना यह है कि यह दलित और ओबीसी वोट थोक के हिसाब से इनैलो या कांग्रेस में न जाए। उस वोट बैंक को रोकने के लिए नई पार्टी या नया गठबंधन खड़ा हो। तभी दलित और ओबीसी वोटों का ट्रांसफर रोका जा सकता है।

हरियाणा विधानसभा की करीब 40 सीटें ऐसी हैं जहां दलित मतदाता चुनाव नतीजों पर खासा असर डालते हैं। जबकि 60 सीटें ऐसी हैं जहां जाटों का वोट शेयर 30 फीसदी है। पिछले चुनावों में बसपा का यह वोट इनैलो की तरफ ट्रांसफर होता रहा है। लेकिन ताज्जुब है कि अभी तक बसपा हरियाणा की राजनीति और खासकर चुनावी राजनीति में खुलकर नहीं उतर पाई। यहां तक कि उसने दलितों के मुद्दे पर हरियाणा में कोई बड़ा आंदोलन तक नहीं छेड़ा है।

अभय चौटाला ने बसपा सुप्रीमो मायावती को राखी बांधकर इनैलो-बसपा गठबंधन को सिरे चढ़ाया था लेकिन अब बसपा ने एक झटके में उसे शनिवार को तोड़ दिया। हालांकि यह घोषणा मायावती की तरफ से नहीं की गई है, यह घोषणा बसपा के हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष प्रकाश भारती और प्रांतीय प्रभारी डॉ. मेघराज ने की है।

यह स्थिति अभी साफ होना बाकी है कि बसपा के इन दोनों प्रांतीय नेताओं ने मायावती से इसकी अनुमति ली है या नहीं। चंडीगढ़ में शनिवार को जब इस गठबंधन की घोषणा हुई तो पत्रकारों ने राजकुमार सैनी से सवाल पूछा था कि वह अगला चुनाव भाजपा टिकट पर लड़ेंगे कि अपनी पार्टी से कि बसपा की टिकट पर। इस सवाल का जवाब सैनी देने से बचते रहे। इस तरह इस सारे मामले में झोल है। क्या भाजपा ने पैसे से बसपा के प्रांतीय नेताओं को खरीद कर यह नया गठबंधन हरियाणा में खड़ा कर दिया है, इसका जवाब वक्त आने पर ही मिलेगा। अगर यह समझौता मायावती की जानकारी के बिना हुआ है तो हरियाणा में यह गठबंधन टूटकर रहेगा। क्योंकि हरियाणा के राजनीतिक इतिहास में अभी बसपा की मौजूदगी इतने बड़े पैमाने पर चुनाव में दर्ज होना बाकी है। वह कौन लोग हैं या दल हैं जो बसपा को आगे कर हरियाणा में राजनीति का नया समीकरण बनाना चाहते हैं। ऐसे चेहरे जल्द सामने आएंगे।

जाटों पर बुरी मार

हरियाणा में भाजपा की हर चाल जाट लीडरशिप को खत्म करने और उनके वोटों का ध्रुवीकरण बिगाड़ने की नीयत से चली जा रही है। जींद उपचुनाव में इसका नमूना हम लोग देख चुके हैं कि किस तरह जाटों के वोटों को तितर-बितर करते हुए भाजपा यह सीट निकालकर लाई। हरियाणा में कांग्रेस, इनैलो, जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) में बंटे जाट वोटरों की राजनीतिक पहचान पर खतरा मंडरा रहा है।

अगले चुनाव में अगर वह किसी एक पार्टी के साथ नहीं खड़े हुए तो नतीजा जींद उपचुनाव वाला होगा। भाजपा हरियाणा को लेकर जबरदस्त तैयारी कर रही है। लेकिन जेजेपी के मुकाबले कांग्रेस और इनैलो में भाजपा की काट करने के लिए न कोई रणनीति है न कोई पहल है।

FASHION.IN

Available all types of
ladies cotton kurties, Fancy Kurties,
Jegin, legin, Fancy Top,
T-Shirts, Trousers and imported
material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें

Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR
DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH
CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490